जय माता दी

Manzoor Ah

Naikoo

भगवती वैष्णो देवी की महिमा

प्राचीन काल से ऋषि-महर्षियों ने अपने तपोबल से आध्यात्मिक विकास तथा जनता में एकता तथा सद्-भावना पैदा करने के लिए खास खास जगहों पर विभिन्न देवताओं के स्थान नियत किए। जैसे कि हरिद्वार, अमरनाथ, काशी विश्वनाथ, जगन्नाथ पुरी, महाकाली (कलकत्ता), ज्वालामुखी (कांगड़ा), मुम्बादेवी (बम्बई), शारदा भगवती (काश्मीर) इत्यादि। किन्तु तीनों शक्तियों--महाकाली, महा-लक्ष्मी तथा महासरस्वती-द्वारा सुशोभित सिद्धपीठ संसार भर में केवल एक ही है—और वह है वैष्णो देवी पीठ। इस की प्राकृतिक सुन्दर गुफा के अंदर महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती तीनों शक्तियों के पिण्डी रूप में एक ही स्थान पर दर्शन होते हैं।

दुर्गा सप्तशती में दिए गए नवार्ण मंत्र "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" में "ऐं" सरस्वती का बीज है। "ह्रीं" महालक्ष्मी का और "क्लीं" महाकाली का। इन तीनों बीजों को चामुण्डा भगवती ने कठिन तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त किया था। इसी कारण इन तीन बीजों के साथ चामुण्डा

देवी का नाम भी सम्मिलित है। विद्या बुद्धि चाहने वालों को केवल "ऐं सरस्वत्यै नमः" मन्त्र का सवा लाख जप करने से बुद्धि विशाल होती है। "ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः" जप करने से धन प्राप्ति और "क्लीं काल्यै नमः" का जप करने से रोग निवृत्ति तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। तीनों बीजों को मिला कर जप करने से शक्ति, ऐश्वर्य और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

त्रिगुणमयी भगवती वैष्णो के दर्शन मात्र से आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है और मनोकामना सिद्ध होती है।

यात्रा का प्रादुर्भाव

यह कहना कठिन है कि यह यात्रा कब शुरू हुई। चिरकाल से वैष्णो भगवती अपने भक्तों के लिए ज्ञान और शान्ति का स्रोत रही हैं।

कहा जाता है कि अनसाली गांव में श्रीधर नाम के एक भक्त ब्राह्मण ने एक यज्ञ किया। उस यज्ञ में एक अद्वितीय सुन्दर और प्रतिभाशाली कन्या भी आई। इस कन्या ने ब्राह्मण को आशीर्वाद दिया और कहा कि मेरे पीछे पीछे आओ। कन्या के तेज के सामने ब्राह्मण विवश था। वह आज्ञानुसार पीछे पीछे गया। कन्या गुफा में चली गई और ब्राह्मण को यह कह कर कि तुम प्रतिदिन यहां आया करना, स्वयं लुप्त हो गई। इस प्रकार वैष्णो देवी की यात्रा का प्रादुर्भाव हुआ।

जहां कन्या ने ब्राह्मण को दर्शन दिए वह दर्शनी दरवाजा

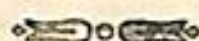
कहलाता है, इस स्थान से त्रिकूट पर्वत का पूरा दर्शन होता हैं जिस के चरणों को बालगंगा धो रही है।

एक कथा के अनुसार वैष्णो देवी रत्नाकर सागर के घर पैदा हुई। इन्होंने प्रण किया कि श्री राम के सिवा किसी दूसरे को वर नहीं बनाएंगी। इन्होंने घोर तपस्या की। श्री राम बनवास के दिनों में भगवती के आश्रम पर आए और कहा कि मैंने पहले ही विवाह किया हुआ है। परन्तु वह न मानीं। तब श्री राम ने भगवती को सान्त्वना दी कि तपस्या करती रहो अगले युग में मिलेंगे। श्री राम के आदेशानुसार गुफा में बैठी भगवती तपस्या कर रही है। इसीलिए भगवती आदिकंवारी के नाम से भी विख्यात हैं।

वैष्णो देवी का संसार भर में अपने ढंग का निराला तीर्थ स्थान है जहां तीनों शक्तियां एक ही स्थान पर विराजमान हैं और उनके चरणों से गंगा बह रही है।

वैष्णो देवी के दर्शन करने वाली महान विभूतियों में श्री गुरु गोविन्द सिंह जी का नाम भी आता है। गुरुजी पुरमंडल के रास्ते वैष्णो देवी आए थे।

प्रत्येक पग पर भगवती का नाम लेने से अनेक कष्ट दूर होते हैं। इसलिए पग पग पर भक्त लोग माता का जयकारा बुलाते हैं।



श्री वैष्णो भगवती की संक्षिप्त कथा

कौड कण्डोली--

जम्मू से आठ मील दूर रास्ते में ही कौड कण्डोली में भगवती वैष्णो जी का एक छोटा सा मन्दिर है। कहा जाता है कि रत्नाकर सागर से चलकर भगवती वैष्णो जी ने सब से पहले कौड कण्डोली की भूमि को अपने आसन ग्रहण से पवित्र किया था। यहां भगवती ने एक बड़ा भारी यज्ञ किया और लोगों को सात्विक भोजन से प्रसन्न किया। वहां भैरों भी भेस बदलकर आया हुआ था जो भगवती के प्रकाशमान स्वरूप पर मोहित होकर उन्हें हर ले जाना चाहता था।

माई देवां का मन्दिर--

कौड कण्डोली से चलकर भगवती माई देवां के मन्दिर पहुंची। भगवती ने वहां भैरों से दुखी भोली भाली जनता को अपने पवित्र उपदेश से अनुगृहीत किया, परन्तु आसुरी वृत्तियों के दास भैरों ने यहां भी उन से विवाह का प्रस्ताव रखा।

भूमक भूमि--

माई देवां के मन्दिर से चलकर भगवती भूमक भूमि (भूम) में पहुंची। इस स्थान पर भैरों की सेना के तीन सेनापति मारे गए, जो साम अथवा दण्ड से भगवती को भैरों के पास ले जाना चाहते थे। यहां भी श्री वैष्णो भगवती का मन्दिर है। कहा जाता है कि श्रीधर जी को भगवती वैष्णो के दर्शन यहीं हुए थे

दर्शनी दरवाजा--

अब भूमक से आगे भगवती दर्शनी दरवाजा की भूमि पर पहुंची और क्षण भर त्रिकूट पर्वत को प्रेम भरी दृष्टि से देखा। इस पर्वत को मणि पर्वत (त्रिकुटा) का द्वार समझ कर श्री हनुमान जी को द्वारपाल के रूप में नियुक्त कर मणिपर्वत की ओर प्रस्थान किया।

श्री बाल गंगा

मणि पर्वत की गोद में बाण के प्रहार से भगवती ने पानी की एक धारा निकालकर उस में स्नान किया और युद्ध के कारण बिखरे सिर के बालों को धोया। तीर द्वारा पानी निकालने के कारण इसका नाम बाण गंगा पड़ा और बालों को इसमें धोने के कारण बाल गंगा। इस में स्नान, सन्ध्या, तर्पण,

दान और पितृश्राद्ध आदि करने का बड़ा माहात्म्य है। धर्मार्थ ट्रस्ट ने यहां पर स्त्रियों के नहाने के लिए एक स्नान घर बनाया है। यहां धर्मार्थ के जन सम्पर्क अधिकारी का कार्यालय भी है। यात्री यहां से सूचना और सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

श्री चरण पादुका मन्दिर–

बाल गंगा से चलकर भगवती ने चरण पादुका में आराम किया। दक्ष प्रजापति के यज्ञ में पिता प्रजापति के मुख से पति श्री महादेव की निंदा सुनकर सती पार्वती ने योग रूपी अग्नि से अपने भौतिक शरीर को जला दिया था। जलते हुए सती के शरीर को महादेव ने अपने कन्धे पर रखकर सब जगह घुमाना आरम्भ किया, जिस से देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। देवताओं की प्रार्थना पर भगवान् विष्णु ने बाण द्वारा सती भगवती के शरीर को टुकड़े टुकड़े कर दिया। ये टुकड़े भारत के कई स्थानों में जा गिरे। भगवान् श्री शंकर उन स्थानों पर स्वयं गए और कहा कि इन स्थानों में जो भक्ति पूर्वक भगवती की आराधना करेगा उसे संसार में कुछ भी प्राप्त करना कठिन न होगा। चरण पादुका में भगवती का दाहिना पांव पड़ने से उसका नाम चरणपादुका पड़ा। शास्त्रों में इसे त्रिपुरा भी कहते हैं।

आदि कुमारी --

भैरों की भयानक सेना भगवती का पीछा कर रही थी। भगवती आदि कुमारी के क्षेत्र में पहुंच गई। इस स्थान में भगवती ने अपने सैनिक भक्तों को दैवी शक्ति दी। भगवती स्वयं भी गर्भजून (गर्भ योनि) के मोर्चे पर युद्ध कर रही थी। यहां पर भगवती ने भक्त सैनिकों को अपने वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराया और कई प्रकार के शस्त्रास्त्रों और भौतिक बल से भैरों की सेना को परास्त किया।

आदि कुमारी में धर्मार्थ ट्रस्ट ने ४ लाख रुपये की लागत से यात्रियों की सुविधा के लिए एक तीन मन्ज़िला नई धर्मशाला और एक लाख रुपये की लागत से २८ फ्लश टट्टियां बनाई हैं।

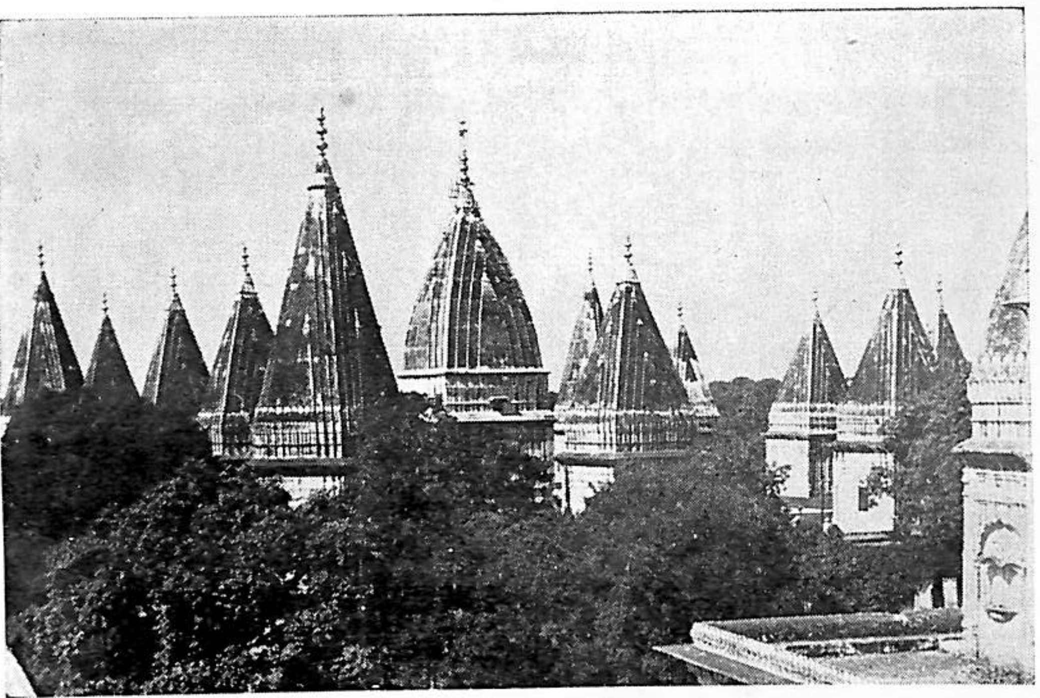
माता का दरबार--

आदि कुमारी से हाथी माथा और सांझी छत्त से होते हुए जब भगवती महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की गुफा पर पहुंची तो उन्होंने देखा कि भैरों बड़ा पेचताव खा रहा है। भगवती ने एक ही तीर से उसका सिर धड़ से पृथक् कर दिया। उस तीर का प्रहार इतने जोर से हुआ कि सिर उड़ कर पहाड़ी की चोटी पर आ पड़ा। यहां भगवती ने स्वयं आकर भैरों

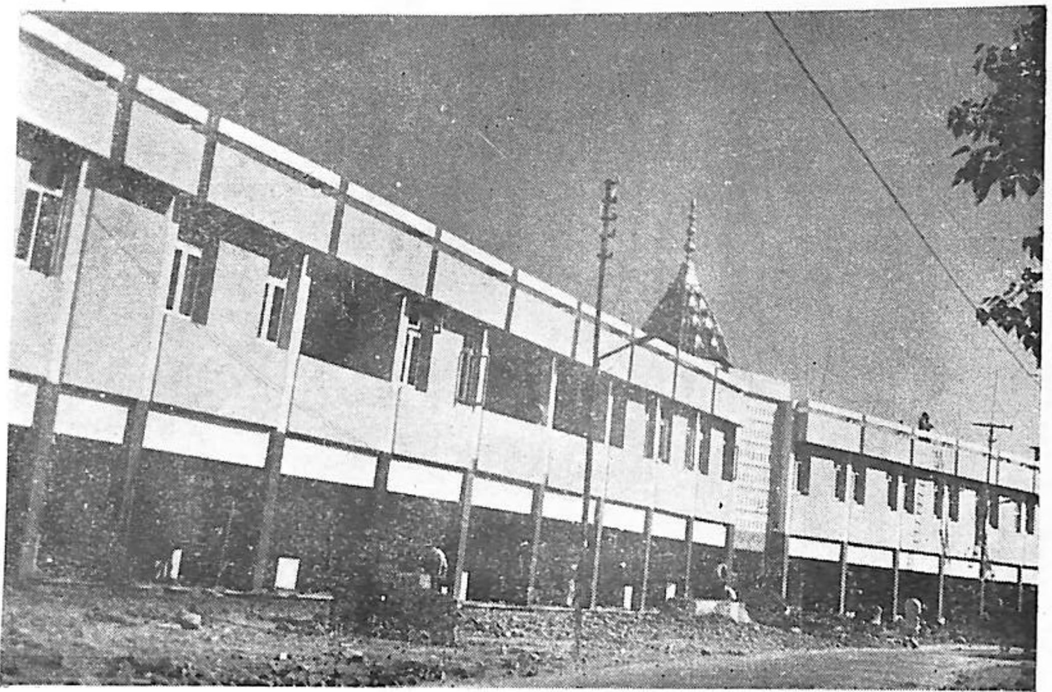
को वर दिया और फिर गुफा में जाकर ध्यान द्वारा महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के साथ एकता को प्राप्त किया। त्रेता युग से आज तक भगवती इस पीठ में तप कर रही हैं। तभी से यह पीठ वैष्णवी पीठ के नाम से प्रसिद्ध है। इसी को "त्रिकुटा भगवती" और "पहाड़ों वाली देवी" भी कहते हैं।

माता का दरबार समुद्र तल से ५३०० फुट की ऊंचाई पर है और बड़ा मनोहर स्थान है। माता का स्थान एक तंग और लम्बी गुफा के भीतर है। माता के चरणों से निर्मल जलधारा बहती है। चरण गंगा में स्नान करने से न केवल थकान दूर होती है अथवा कई जन्मों के पाप भी नष्ट होते हैं। गुफा के अन्दर भगवती श्री वैष्णो देवी की तीन पिण्डियां महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में हैं। भगवती वैष्णो इन तीनों स्वरूपों का एक नाम है। गुफा के भीतर स्वयंभू मूर्तियां और कई देवताओं के आकार भी हैं।

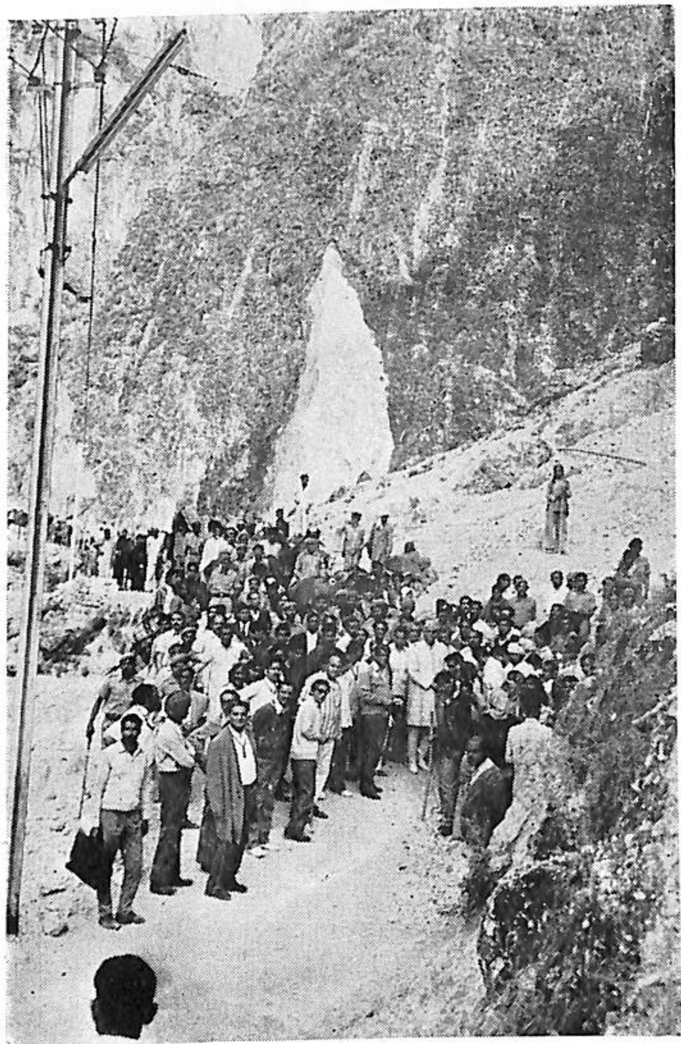
यात्रियों की जानकारी के लिए यह कहना अनुचित न होगा कि धर्मार्थ ट्रस्ट को गुफा के अंदर चढ़ावे का कोई भाग नहीं मिलता। इसे तो वही चढ़ावा



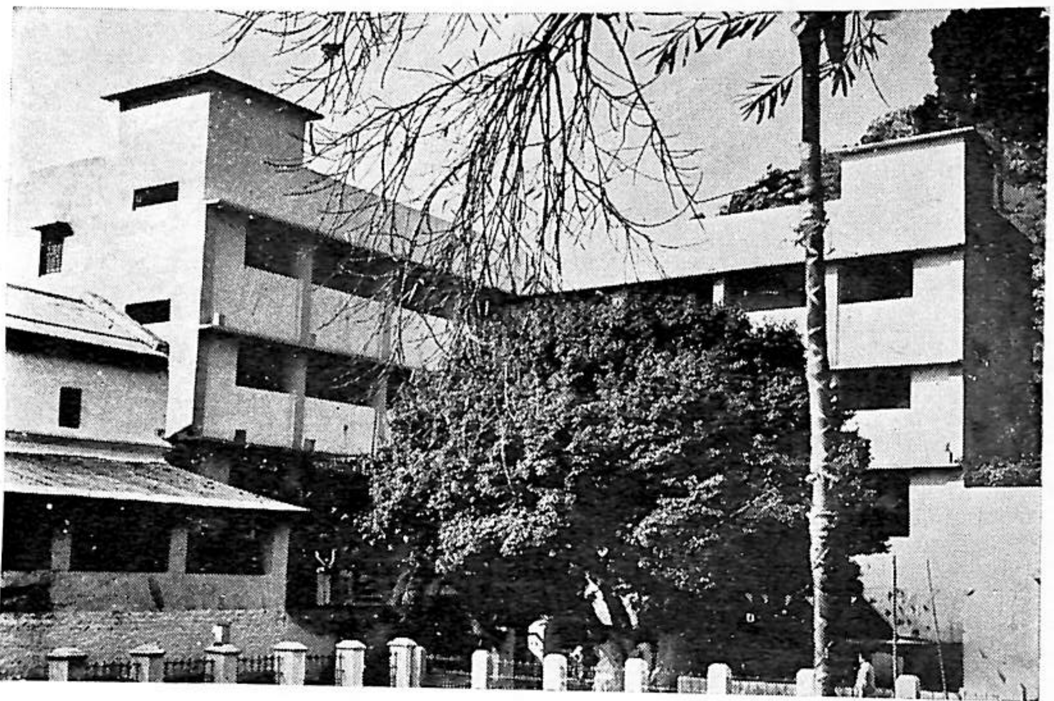
जम्मू में श्री रघुनाथ मन्दिर का एक दृश्य



जम्मू में यात्रियों के ठहरने के लिए नया बनाया हुआ हरि भवन



श्री वैष्णों देवी जाते हुए यात्री



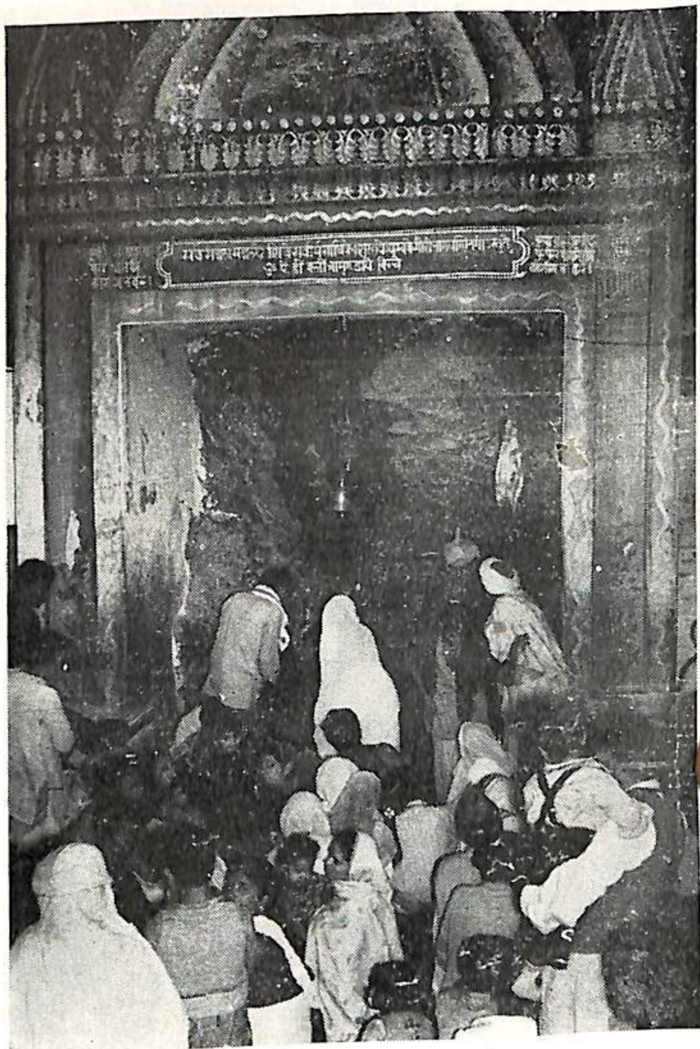
ग्रादिकंवारी में यात्रियों के लिए नव निर्मित प्रताप भवन



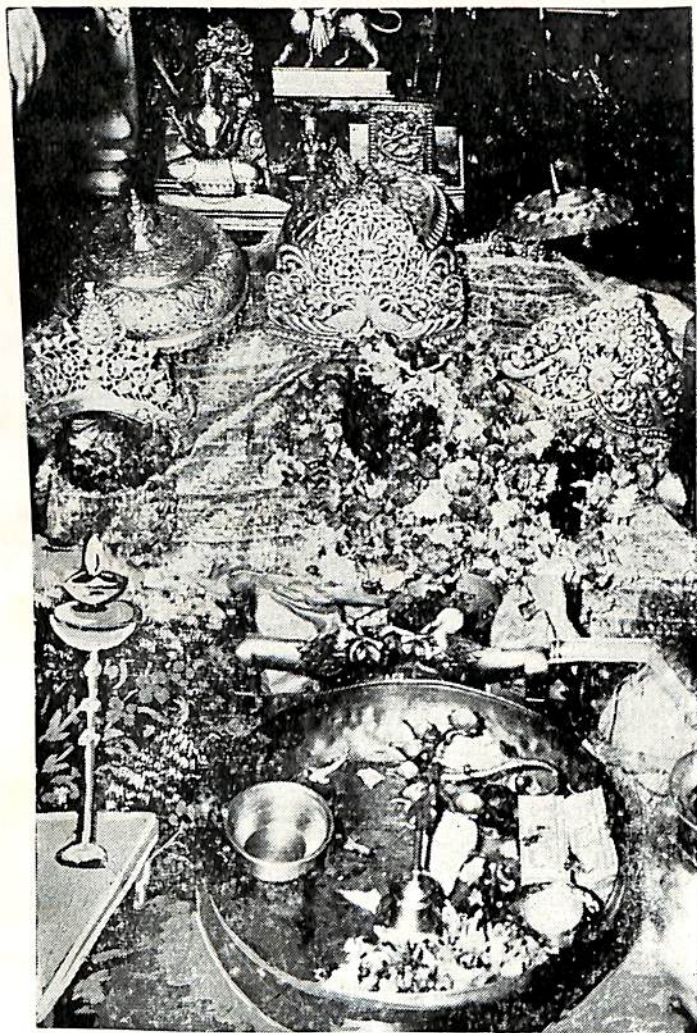
आदिकंवारी में डा० कर्ण सिंह जी माता के दरबार में



हाथों माथा की मुश्किल चढ़ाई चढ़ते हुए यात्री



पवित्र गुफा में जाने के लिए तैयार



पवित्र गुफा में महासरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली पिण्डी के रूप में

मिलता हैं जो दानी लोग अटका रजिस्टर में लिखकर देते हैं या धर्मार्थ द्वारा रखे हुए दान-पात्र में डाल देते हैं। यह सारा दान, दानी पुरुषों की इच्छानुसार श्री वैष्णो देवी के स्थान की उन्नति के लिए ही खर्च होता है ।







श्री रघुनाथ मन्दिर

श्री रघुनाथ जी का मन्दिर जम्मू में सब से बड़ा मन्दिर है। इसके चारों ओर अवतारों और देवताओं के चौदह मन्दिर हैं। श्री रघुनाथ मन्दिर के अहाता में ऋग्,यजु,साम और अथर्व नाम के चार विशाल भवन हैं। इन चारों भवनों और मन्दिरों के कोनों में बारह लाख शालिग्रामों के साथ साथ ऋषि मुनियों और रघुवंशीय देवताओं की मूर्तियां विधिपूर्वक स्थापित की हुई हैं, जो सारे भारत में कहीं भी इकटठी देखने में नहीं मिलतीं। मन्दिर के अहाता के अन्दर ही संस्कृत की शिक्षा के लिए संस्कृत विद्यालय, छात्रालय, भोजनालय, संस्कृत पुस्तकालय और शोध संस्थान हैं। यहां पर मुसाफिरों और श्री वैष्णो देवी के यात्रियों के आराम के लिए तारा देवी स्मारक धर्मशाला और हरि भवन हैं। ४०० यात्री एक समय पर यहां ठहर सकते हैं।

मन्दिर में प्रातः तथा सायं पूजा, आरती, संगीत, वेदोच्चारण, सत्संग, हरि कीर्त्तन, कथा एवं व्याख्यानों की मधुर ध्वनि भगवद् भक्तों के दिल को लुभाकर सहज ही में एकाग्र कर देती है।

यह सब कुछ स्वर्गवासी महाराजा गुलाब सिंह और उनके सुपुत्र धर्मावतार स्वंगवासी महाराजा रणवीर सिंह जी की कीर्ति कौमुदी ही है। इस सर्वांग पूर्ण मन्दिर के अतिरिक्त जम्मू में और भी बहुत से मन्दिर हैं जो जम्मू काश्मीर के महाराजाओं की धर्मनिष्ठा के जीते जागते उदाहरण हैं।

श्री रणवीरेश्वर मन्दिर

परेड ग्राऊंड के पास रणवीरेश्वर महादेव का एक सुन्दर मन्दिर है, जिस में पार्वती परमेश्वर की ऋद्धि सिद्धि सहित दो मूर्तियां हैं। उनके सामने स्फटिक कल्पित एकादश रुद्र और मन्दिर के मध्य भी एकादश रुद्रों की स्थापना की गई है। उनके दक्षिण-उत्तर की ओर शिवलिंग स्थापित किए गए हैं। मन्दिर के बरामदे में श्री कार्तिक, श्री गणेश और नन्दी गण की बड़ी सुन्दर मूर्तियां हैं। मन्दिर को देखने से ही शिव भक्तों के हृदय गद्गद् हो जाते हैं।

श्री गदाधर मन्दिर——

मण्डी मुबारिक की बड़ी ड्योढ़ी की बाईं ओर श्री गदाधर जी का मन्दिर है, जिस में रखी गई मूर्तियां अपने दर्शन मात्र से ही भक्तों की भक्ति को जाग्रत करके उनके हृदयों को अपने चरणों में एकाग्र कर लेती हैं।

श्री राधाकृष्ण मन्दिर

रानी तालाब पर श्री राधा कृष्ण जी का मन्दिर है, यहां बड़े बड़े सिद्ध-महात्मा रहा करते थे, इसलिए यह सिद्धपीठ माना जाता है।

श्री महालक्ष्मी मन्दिर

यह सुन्दर मन्दिर पक्काडंगा में स्थित है। महालक्ष्मी जी की मूर्ति बड़ी ही अद्भुत है।

पुरमण्डल व उत्तरवाहिनी

जम्मू से २२ मील दूर पुरमण्डल व उत्तरवाहिनी के दो प्रसिद्ध तीर्थ हैं। दोनों तीर्थ देविका नदी के किनारे पर स्थित हैं और एक दूसरे से तीन चार मील की दूरी पर हैं। पुरमण्डल में शिवजी का बहुत पुराना मन्दिर है। यहां चैत्र चतुर्दशी और शिवरात्रि पर बहुत बड़ा मेला लगता है। लोग दूर दूर से शिवजी के दर्शन और पूजा के लिए आते हैं। मुगल बादशाहों और शेरेपंजाब महाराजा रणजीत सिंह ने भी इस मन्दिर को पट्टे प्रदान किए हैं।

उत्तरवाहिनी में श्री गदाधर जी का मन्दिर है। उत्तर वाहिनी को गया के नाम से भी पुकारा जाता है, यहां पर श्राद्ध

ग्रौर तर्पण करने का वही माहात्म्य है, जो गया जी का है। इसीलिए बहुत से लोग यहां पर श्राद्ध ग्रौर स्नान करने के लिए ग्राते हैं। विभिन्न त्योहारों पर यहां भारी मेला लगता है।

श्री ग्रभिमुक्तेश्वर

देविका नदी के दूसरे किनारे पर ग्रभिमुक्तेश्वर का मन्दिर है। यहां पर नंदीगण की बड़ी विशाल सफेद पत्थर की मूर्ति है।

श्री रणवीरसिंहेश्वर

ग्रभिमुक्तेश्वर से एक किलोमीटर की दूरी पर रणवीर सिंहेश्वर का मन्दिर है। इस मन्दिर में भगवान राम, माता सीता ग्रौर लक्ष्मण की बड़ी विशाल ग्रौर ग्रद्भुत मूर्तियों के ग्रलावा ग्यारह रुद्र हैं। यह मन्दिर एक पहाड़ी पर स्थित है ग्रौर दूर से दिखाई देता है। इस से कुछ ही दूरी पर रामेश्वर जी का मन्दिर है।

जम्मू से कटरा

जम्मू से कटरा तक ३० मील की यात्रा ग्राजकल टैक्सी, कारों ग्रौर बसों द्वारा की जाती है। कटरा तक पहाड़ों ग्रौर जंगलों में से सांप की तरह बल खाती हुई सड़क विचित्र दृश्यों

से भरपूर है। कहीं खुश्क चट्टानें और कहीं हरी भरी पहाड़ियां, कहीं साफ स्फटिक सदृश पानी की बहती नदियां और कहीं घने जंगल यात्रियों के दिल में भारी आकर्षण पैदा करते हैं।

कटरा

यह छोटा सा कस्बा त्रिकुटा पर्वत के दामन में बसा हुआ है, जो समुद्र तल से तीन हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्थित है। इसकी प्राकृतिक सुन्दरता मनुष्य के हृदय पर गहरा प्रभाव डालती है। यहां भी धर्मार्थ ट्रस्ट की ओर से निर्मित एक बड़ी धर्मशाला है। इसके विशाल आंगन में श्री महालक्ष्मी का मन्दिर है।



धर्मार्थ ट्रस्ट

आज से लगभग 140 वर्ष पूर्व महाराजा गुलाब सिंह ने 5 लाख रुपये भेंट करके श्री रघुनाथ निधि स्थापित की ताकि इस रुपये के सूद से नए मन्दिर निर्मित किए जाएं और पुराने मन्दिरों की मुरम्मत हो तथा दूसरे धर्म के कार्य किए जाएं।

रघुनाथ निधि की देख भाल और रक्षा के लिए महाराजा रणवीर सिंह ने एक धर्मार्थ कौंसिल बनाई और उसके संचालन के लिए एक धर्मार्थ विधान बनाया।

श्री महाराजा प्रताप सिंह अपने पूज्य पिता की इच्छा-नुसार धर्मार्थ की देख भाल करते रहे। उन्हें लोग प्यार से धर्मावतार कहते थे।

श्री महाराजा हरि सिंह जी ने 1931 में धर्मार्थ के आधीन सभी मन्दिर हरिजनों के लिए दर्शनार्थ खोल दिए।

डा० कर्ण सिंह, सोल ट्रस्टी, के तत्त्वावधान में धर्मार्थ कौंसिल लगभग 100 मन्दिरों तथा तीर्थस्थानों की देख भाल कर रही है। सोल ट्रस्टी धर्मार्थ कौंसिल को एक एक वर्ष

के लिए नियुक्त करते हैं। कौंसिल के प्रधान एवं सदस्य निःशुल्क सेवा करते हैं।

धर्मार्थ ट्रस्ट के आधीन एक संस्कृत पाठशाला काशी में और दूसरी जम्मू में चल रही है जहां विद्यार्थियों से कोई फीस नहीं ली जाती अपितु गरीब विद्यार्थियों को मुफत खाना भी दिया जाता है। एक रणवीर संस्कृत रिसर्च इन्स्टीच्यूट भी है जिस में ६ हज़ार से अधिक बहुमूल्य पाण्डुलिपियां हैं जिन से देश और विदेश के रिसर्च स्कालर लाभ उठा रहे हैं।

धर्मार्थ ट्रस्ट की धर्मशालाएं जम्मू, कटरा, आदिकंवारी वैष्णो-भवन, रामबन, भद्रवाह, गुलमर्ग, क्षीरभवानी, हरिद्वार और वाराणसी में स्थित हज़ारों यात्रियों को रहने की सुविधा प्रदान कर रही हैं।

धर्मार्थ ट्रस्ट के आधीन प्रसिद्ध मन्दिर निम्नलिखित हैं :

श्री रघुनाथ मन्दिर जम्मू, श्री गदाधर जी मन्दिर उत्तरवाहिनी, श्री वासदेव जी मन्दिर भद्रवाह, श्री श्रीस्थल देवी किश्तवाड़, श्री शंकराचार्य श्रीनगर, श्री क्षीरभवानी श्रीनगर, श्री शारिका भगवती श्रीनगर, श्री ज्वाला जी खिरयू, श्री शिव मन्दिर रामेश्वरम, श्री शिव मन्दिर कङ्खल, श्री शिव मन्दिर वाराणसी, श्री शिव मन्दिर गुलमर्ग, और श्री शिव मन्दिर पहलगाम

